नया नियम III

टिप्पणियाँ –

नया नियम III: पाठ्यक्रम

कक्षा १:

I. पाठ्यक्रम परिचय।
II. कारावास संदेशपत्र (पत्रियां)।

कक्षा २:

III. पुरोहितीय पत्रियां।
IV. दूसरी पीढ़ी की कलीसियाः परिचय।

कक्षा ३:

IV. दूसरी पीढ़ी की कलीसिया (जारी.)।
V. यहूदी विश्वासियों में उत्तरकालीन मसीहियत।

कक्षा ४:

VI. सताव और ज्ञानवाद का उत्थान।

कक्षा ५:

VI. सताव और ज्ञानवाद का उत्थान (जारी.)
परीक्षा।

नया नियम III

टिप्पणियाँ –

नया नियम III: परीक्षा

संभावित २० संकेत प्रश्न

१) कारावास पत्रियां कैसे एक दूसरे से सम्बन्धित हैं स्पष्ट कीजिए (पृष्ठ ३७६)।

२) स्पष्ट कीजिए कि ७० ए. डी. में क्या हुआ था। इसकी प्रतिध्वनियां क्या थीं (पृष्ठ ३८४)।

३) ज्ञानवाद पर चर्चा कीजिएः यह क्या है और क्यों यह समस्या है? (पृष्ठ ३८७, ३८९)।

संभावित १० संकेत प्रश्न

१) इफिसियों की पुस्तक के लिए एक संभावित रूपरेखा दीजिए (पृष्ठ ३७६, ३७७)।

२) ''ओनेसिमस'' का अर्थ क्या है और वह कौन था? (पृष्ठ ३७८)।

३) पुरोहितीय पत्रियों के प्रमुख प्रसंग क्या हैं? (पृष्ठ ३७९)।

४) याकूब की पुस्तक की प्रकृति क्या है? (पृष्ठ ३८४)।

५) इब्रानियों की पुस्तक की प्रकृति क्या है? (पृष्ठ ३८५)।

६) १ पतरस का प्रमुख प्रसंग/मुख्य पद क्या है? (पृष्ठ ३९०)।

नया नियम III

टिप्पणियाँ —

I. पाठ्यक्रम परिचय।

नये नियम के पाठ्यक्रमों की श्रृंखला

पुराने नियम के पाठ्यक्रमों की श्रृंखला के समान हम सम्पूर्ण नए नियम का अध्ययन तीन संक्षिप्त पाठ्यक्रमों की श्रृंखला में नहीं कर सकते। हमारा उद्देश्य नए नियम की विषय-वस्तु का सर्वेक्षण करना, उसे व्यवस्थित करना, तथा कुछ चुनिन्दा विशिष्ट विषयों के साथ साथ सामान्य प्रसंगों का अध्ययन करना है।

इन तीन पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने के बाद, हम नए नियम के बारे में एक सामान्य समझ व्यक्त करने में सक्षम हो सकेंगे। हम नए नियम के कुछ विशिष्ट भागों और विषयों के बारे में गहरे स्तर पर संवाद करने में भी सक्षम हो सकेंगे।

हमारा लक्ष्य नए नियम संकलन के व्यक्तिगत भागों तथा एक सम्पूर्ण इकाई के रूप में २७ पुस्तकों का समझपरक ढाँचा स्थापित करने के द्वारा नए नियम के अध्ययन को और अधिक बढ़ावा देना है।

नये नियम के तीन पाठ्यक्रमः

नया नियम I: सुसमाचार और यीशु मसीह। इसमें मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना सम्मलित हैं।

नया नियम II: कलीसिया का जन्म। इस वर्ग में प्रेरितों के काम, रोमियों, १ और २ कुरिंथियों गलतियों, तथा १ और २ थिस्सलुनिकियों का अध्ययन सम्मलित है।

नया नियम III: कलीसिया की प्रगति। इस श्रेणी में कारावास पत्रियां, पुरोहितीय पत्रियां, सामान्य पत्रियां तथा इब्रानियों सम्मलित हैं।

पाठ्यक्रमों को श्रृंखला के रूप में विकसित किया गया है। यदि आपने पहले पाठ्यक्रम की सामग्री को समाप्त नहीं किया है तो आप दूसरे पाठ्यक्रम को वहाँ से आरम्भ कर सकते हैं जहाँ आपने पहले को छोड़ा है। ऐसा ही पाठ्यक्रम ३ को प्रारंभ करने के लिए भी है (इसी कारण पाठ्यक्रम ३ में कम सामग्री का समावेष है, क्योंकि पहले पाठ्यक्रम का अवलोकन अपेक्षित है)।

नया नियम III

टिप्पणियाँ —

क. इस पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु।

१. यह पाठ्यक्रम नए नियम की कलीसिया की उन्नति का सर्वेक्षण उपलब्ध कराता है कि कैसे उसने रोमी संसार में अपना अस्तित्व बनाए रखा और कार्य किया।

२. हम निम्नलिखित श्रेणियों का अध्ययन करेंगेः

ख. ''कारावास पत्रियां या चिठ्ठियां'' (इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, और फिलेमोन)।

ग. ''पुरोहितीय पत्रियां या चिठ्ठियां'' (१ और २ तिमुथिस तथा तीतुस)।

घ. दूसरी पीढ़ी की कलीसिया।

ङ. यहूदी विश्वासियों के मध्य उत्तरकालीन मसीहियत (याकूब, इब्रानियों)।

च. सताव और ज्ञानवाद का उत्थान (१ और २ पतरस, १,२,३ यूहन्ना, यहूदा तथा प्रकाशितवाक्य)।

लेखक की टिप्पणीः

क्योंकि यह पाठ्यक्रम श्रृंखला में तीसरा है, यह पाठ्यक्रम वहाँ से आरंभ होना चाहिए जहाँ आपने पिछला नया नियम पाठ्यक्रम समाप्त किया था।

इस अपेक्षा में कि ऐसी सामग्री होगी जिसे पिछले दो पाठ्यक्रमों में पूरा नहीं किया गया होगा, इस पाठ्यक्रम को कुछ हद तक पिछले दो नये नियम पाठ्यक्रमों से छोटा रखा गया है।

टिप्पणियाँ —

II. कारावास पत्रियां (चिठ्ठियां)।

क. पौलुस का पकड़ा जाना और कैद किया जाना।

१. पौलुस की गिरफ्तारी (देखें प्रे. का. २१:२७.३६)।

क. पौलुस को अपनी तीसरी प्रचार यात्रा पूरी करने के बाद यरूशलेम में पकड़ा गया।

ख. उन पर आरोप लगाया गया कि वह एक अन्यजाति को मन्दिर के उस क्षेत्र में लाए जो केवल यहूदियों के लिए था।

१) यह घटना दंगे में बदल गई।

२) इसे शायद उन यहूदियों के द्वारा ही प्रोत्साहित किया गया था जिन्होंने पौलुस को एशिया माइनर में सताया था (देखें प्रे. का. २०:१६.१९)।

३) निश्चित रूप से आरोप पौलुस के अन्यजातियों के प्रति उदार रवैये की प्रतिष्ठा से उत्प्रेरित था (देखें प्रे. का. २१:१७.२६; गल. २:१.१०)।

४) पौलुस उन दीवारों को तोड़ने का प्रयास कर रहे थे जो यहूदियों और अन्यजातियों को अलग करती थीं (इफि. २:१४; गल. ३:२८)।

२. पौलुस का कैद किया जाना (देखें प्रे. का. २३:२३.२६:३२)।

क. पौलुस को यरूशलेम में पकडे जाने के बाद उसे कैसरिया ले जाया गया जहाँ वह दो वर्षों तक कैदी रहे (प्रे. का. २४:२७)।

ख. इसके बाद पौलुस को रोम भेज दिया गया जहाँ वह दो वर्ष तक घर में नजरबन्द रहे (प्रे. का. २८:१६,३०,३१)।

टिप्पणियाँ —

ख. कारावास पत्रियों के बीच सामूहिक सम्बन्ध।

१. सभी पत्रियां जेल से ही लिखी गईं (यद्यपि यह संभव है कि इन्हें कैसरिया में पौलुस की कैद के दौरान लिखा गया हो, परन्तु गवाह रोम में कैद की ओर इशारा करते प्रतीत होते हैं (देखें इफि. ४:१; ६:२०; फिलि. १:१२-१४; कुलु. ४:१०, १८; और फिलेमोन १,९,१०,१३,२३)।

२. सभी पत्रियों में पौलुस के साथ समान सहयोगी थे।

क. मरकुस, देमास, अरिस्तखुर्स, लूका, इपफ्रास (कुलु. ४:१०, १४; फिलेमोन २३,२४)।

ख. पत्रियों को पहुँचाने वाले (तुखिकुस) भी समान थे (देखें इफि ६:२१; कुलु. ४:७; फिलेमोन १०; और कुलु ४:९)।

३. पुस्तकों में समान विषय-वस्तु पाई जाती है (विशेष रूप से इफिसियों और कुलुस्सियों में)।

क. मसीह सिर हैं (इफि १:२२, २३; कुलु. १:१८, १९)।

ख. उतारना और पहनना (इफि. ४:२२-२५; कुलु. ३:५-१४)।

ग. घरेलू सम्बन्धों के बारे में निर्देश (इफि ५:१-६:९; कुलु. ३:१८-४:१)।

ग. इफिसियों की पुस्तक।

१. इफिसियों की सामान्य रूपरेखा।

क. मसीही के विशेषाधिकार (अधिकार) (अध्याय १-३)।

ख. मसीही की जिम्मेदारियां (अध्याय ४-६)।

ग. इन दो खण्डों को सैद्धान्तिक (अध्याय १-३), तथा व्यवहारिक (अध्याय ४-६) रूप में वर्णित किया जा सकता है।

टिप्पणियाँ –

२. इफिसियों की विस्तृत रूपरेखा (वाचमैन नी द्वारा पुस्तक की व्यवस्था के आधार पर)।[१]

क. ''बैठने'' का भेद (अध्याय १-३)

१) अधिकार का पद।

२) हमें मसीह के साथ जिलाया गया है।

ख. ''चलने'' का भेद (इफि. ४:१-६:९)।

१) धार्मिकता के कार्य।

२) मसीह हम में रहते हैं (देखें गल. २:२०)।

ग. ''खड़े रहने'' का भेद (इफि. ६:१०-२४)।

१) अधिकार का प्रदर्शन।

२) हमारा संघर्ष आत्मिक है, इसलिए हमारी सामर्थ और अधिकार भी आत्मिक है।

३. इफिसियों का मुख्य प्रसंग - अधार्मिक संसार में मसीही जीवन जीने की प्रक्रिया।

४. इफिसियों का सहायक प्रसंग - अधार्मिक संसार लोगों पर आधारित नहीं है, बल्कि उन दुष्ट ताकतों पर आधारित है जो लोगों को प्रभावित करती हैं (उदाहरण के लिए २:२ में ''आकाश के अधिकार के हाकिम के अनुसार'')।

घ. फिलिप्पियों की पुस्तक (फिलिप्पियों की सामान्य रूपरेखा)।

१. खण्ड १- सम्बोधन और अभिवादन (फिलि १:१-२)।

२. खण्ड २- धन्यवादिता और प्रार्थना (फिलि. १:३-११)।

३. खण्ड ३- पौलुस की कैद के सकारात्मक परिणाम (फिलि. १:१२-२६)।

४. खण्ड ४- निर्देश और चुनौती (फिलि. १:२७-२:१८)।

५. दूसरों को उनके पास भेजने का स्पष्टीकरण (फिलि. २:१९-३०)।

टिप्पणियाँ –

६. खण्ड ६- निरंतर निर्देश और चुनौती (फिलि. ३:१-४:९)।

७. खण्ड ७- उपलेखः दान के प्रति सराहना में प्रतिउत्तर (फिलि. ४:१०-१९)।

८. खण्ड ८- चुनना (फिलि. ४:२०-२३)।

टिप्पणीः फिलिप्पियों का मुख्य प्रसंग दुखों के बीच मसीह में आनन्द है।

ङ. कुलुस्सियों की पुस्तक।

१. कुलुस्सियों की एक सामान्य रूपरेखा।

क. अभिवादन और प्रार्थना (कुलु. १:१-१४)।

ख. मसीह का प्रभुत्व और सेवकाई (कुलु. १:१५-२:२३)।

ग. मसीह की प्रभुता के अनुसार जीवन बिताने का प्रोत्साहन (कुलु. ३:१-१७)।

घ. पारिवारिक सम्बन्ध (कुलु. ३:१८-४:२-१८)।

ङ. अन्तिम निर्देश और सूचना (कुलु. ४:२-१८)।

२. कुलुस्सियों का मुख्य प्रसंग- यीशु मसीहः प्रभु एवं छुड़ानेवाला।

च. फिलेमोन की पुस्तक

१. ''Onesimus अर्थात ओनेसिमस'' नाम का अर्थ ''उपयोगी या लाभदायक'' है। ध्यान दीजिए कि पद १०,११ में कैसे पौलुस यमक का प्रयोग करते हैं (वह उनके नाम तथा उनके अर्थ को परस्पर अदल बदल कर प्रयोग करते हैं)।

२. उस समय का सामान्य प्रचलन तथा कानून यह था कि जो दास भाग जाए उनके पकड़े जाने पर उन्हें क्रूस पर चढ़ा दिया जाए।

क. हमें फिलेमोन को पढ़ते समय यह समझ रखना आवश्यक है।

ख. हम देख सकते हैं कि फिलेमोन वास्तव में एक मध्यस्थता का पत्र हैं।

टिप्पणियाँ –

चर्चा का बिंदु

उन तरीकों पर विचार करें जिनसे आप बाइबल अध्ययन हेतु फिलेमोन को मध्यस्थता की अवधारणा के लिए प्रयोग कर सकते थे।

III. पुरोहितीय पत्रियां।

लेखक की टिप्पणीः

१ और २ तीमुथियुस तथा तीतुस को ''पुरोहितीय पत्रियां'' कहा गया है क्योंकि इनका केन्द्र बिन्दु एक चरवाहे यानि पासबान या पुरोहित (स्थानीय कलीसिया के अगुवे) के निर्देश और कर्तव्य हैं।

क. पुरोहितीय पत्रियों के प्रसंग।

१. सामान्य ''पुरोहितीय'' प्रसंग के साथ साथ झूठे धर्मसिद्धान्तों के विरुद्ध चौकसी और कलीसिया में सांसारिकता के विरुद्ध चौकसी के प्रसंग भी हैं।

क. झूठे धर्मसिद्धान्त (देखें १ तीमु. १:१-११; ३:१४-४:५; ६:३-१०; २ तीमु. ३:१-१७; ४:१-४; और तीतुस १:१०-१६)।

ख. सांसारिकता (देंखें १ तीमु. ४:१-५; ६:१७, २०; २ तीमु. २:१६; ३:१-४; ४:१०; और तीतुस २:११-१३; ३:९)।

ख. १ तीमुथियुस की पुस्तक।

१. १ तीमुथियुस की सामान्य रूपरेखा।

क. अभिवादन और परिचय (१ तीमु. १:१-२०)।

ख. प्रोत्साहन और निर्देश (१ तीमु. २:१-६:१९)।

१) प्रार्थना (१ तीमु. २:१-८)।

२) स्त्रियां (१ तीमु. २:९-१५)।

३) अध्यक्ष और सेवक (१ तीमु. अध्याय ३)।

४) धर्मत्याग (१ तिमु ४:१-५)।

टिप्पणियाँ –

५) एक सेवक की प्रतिष्ठा तथा अनुशासन (१ तीमु. ४:६-१६)।

६) विधवाएं (१ तीमु. ५:१-१६)।

७) प्राचीन (१ तीमु. ५:१७-२५)।

८) सेवक (१ तीमु. ६:१-१६)।

९) धनवान लोग (१ तीमु. ६:१७-१९)।

ग. निष्कर्ष (१ तीमु. ६:२०,२१)।

२. १ तीमुथियुस का प्रमुख प्रसंग और मुख्य पद।

क. प्रमुख प्रसंग- एक जवान सेवक को कलीसिया की व्यवस्था, व्यक्तिगत चाल-चलन और उसके कार्य के बारे में प्रोत्साहन और सलाह।

ख. मुख्य पद- १ तीमु. ४:१५, ''इन बातों को सोचते रह और इन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह, ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो।''

चर्चा का बिंदु

विचार करें कि १ तीमु. ४:१५ को मुख्य पद के रूप में कैसे १तीमुथियुस की पुस्तक को सारांशित करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

घ. २ तीमुथियुस की पुस्तक

१. २ तीमुथियुस की सामान्य रूपरेखा।

क. अभिवादन और परिचय (अध्याय १)।

ख. प्रोत्साहन और निर्देश (अध्याय २)।

१) प्रतिबद्धता एवं दृढ़ता (२ तीमु. २:१-१३)।

२) व्यक्तिगत सलाह (२ तीमु. २:१४-२६)।

टिप्पणियाँ –

ग. भविष्यद्वाणियां और तैयारियां (अध्याय ३)।

घ. प्रचार के लिए एक गंभीर चेतावनी (२ तीमु. ४:१-८)।

ङ. व्यक्तिगत सूचना (२ तीमु. ४:९-२२)।

२. २ तीमुथियुस का प्रमुख प्रसंग और मुख्य पद।

क. प्रमुख प्रसंग-एक नौजवान सेवक के लिए और अधिक निरंतर व्यक्तिगत प्रोत्साहन और सलाह।

ख. प्रमुख पद- २ तीमु. ४:५, ''सब बातों में सावधान रह, दुःख उठा, सुसमाचार प्रचार का कार्य कर, और अपनी सेवा को पूरा कर।''

चर्चा का बिंदु

विचार करें कि २तीमु. ४:५ को कैसे मुख्य पद के रूप में २तीमुथियुस की पुस्तक को सारांशित करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

ङ. तीतुस की पुस्तक।

१. तीतुस की सामान्य रूपरेखा।

क. अभिवादन (तीतु. १:१-४)।

ख. निर्देश (तीतु. १:५-२:१५)।

१) प्राचीनों का चुनाव (तीतु. १:५-१६)।

२) विशिष्ट समूहों के लिए विशिष्ट निर्देश (तीतु. २:१-१५)।

ग. ईश्वरीय जीवन जीने के लिए निर्णायक निर्देश (तीतु. ३:१-११)।

घ. व्यक्तिगत सूचना (तीतु. ३:१२-१५)।

टिप्पणियाँ —

२. तीतुस का प्रमुख प्रसंग और मुख्य पद।

क. मुख्य प्रसंग - ईश्वरीय जीवन और सेवक की जिम्मेदारियों के सम्बन्ध में प्रोत्साहन और सलाह।

ख. मुख्य पद - तीतु. १:५; २:११; २:१५; ३:८, ''इन बातों के बारे में बोल.....''

चर्चा का बिंदु

विचार करें कि तीतु. १:५,२:१,२:१५ और ३:८ को कैसे तीतुस की पुस्तक को सारांशित करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

IV. दूसरी पीढ़ी की कलीसिया।

क. ऐतिहासिक संदर्भ।

१. उत्तरकालीन नया नियम की किसी भी पुस्तक के सामान्य अध्ययन पर विचार करने से पहले हमें ऐतहासिक संदर्भ स्थापित करना आवश्यक है।

२. जिस समय १ पतरस और १ यूहन्ना जैसी पुस्तकें लिखी गईं, पहली पीढ़ी के मसीही विश्वासी दूसरी पीढ़ी के लिए मार्ग प्रशस्त कर रहे थे।

क. पहली पीढ़ी पर बड़े उत्साह, ऊर्जा और सामर्थ की छाप थी। सब कुछ ताज़ा और शुद्ध था।

ख. दूसरी पीढ़ी विशिष्टि विभिन्न परिवर्ती कारकों के साथ आरंभ हुई जिन्होंने कलीसिया के जीवन के महत्व और उसके केन्द्र बिन्दु को बदल दिया। हम इन भिन्नताओं और उनके प्रभावों का संक्षिप्त अध्ययन करना चाहते हैं।

ख. यहूदीवाद से मसीहियत का निर्णायक अलगाव।

१. मसीही कलीसिया यहूदी कलीसिया के रूप में आरम्भ हुई। सुसमाचार प्राथमिक रूप से यहूदियों को पहुँचाया गया। रोमी संसार में आरंभिक मसीहियत को संभवतया यहूदियों का एक पंथ समझा गया।

२. पहली पीढ़ी की कलीसिया ने यहूदी प्रथाओं को अपना लिया और कलीसिया को विश्वव्यापी बनने देने में उसे संघर्ष करना पड़ा (देखें गल. अध्याय २)। संघर्ष यह था कि अपने आप को यहूदीवाद में कैसे सम्मलित किया जाए।

टिप्पणियाँ —

३. दूसरी पीढ़ी की कलीसिया अधिक से अधिक विश्वव्यापी बनती गई।

क. यह एक नए संघर्ष के विरुद्ध हुआ। बजाए इसके कि अपने आप को यहूदीवाद में सम्मलित करने के रास्ते खोजे जाएं, इसने यहूदियों से अलग अपनी एक पहचान बना ली (देखें फिलि. ३:२)।

ख. इस नए संघर्ष के साथ एक दूसरा और गम्भीर संघर्ष आया। नई विश्वव्यापी कलीसिया ने नई समस्याओं को जन्म दिया जो सांसारिकता से सम्बन्धित थीं।

ग. रोमी सताव का आरम्भ।

१. पहली सदी की कलीसिया का अधिकतर सताव यहूदियों के द्वारा किया गया। रोमी संसार ने कलीसिया को यहूदी पंथ के रूप में देखा और वह इससे त्रस्त नहीं हुआ और न उसे कोई परेशानी हुई।

२. दूसरी पीढ़ी में कलीसिया विश्वव्यापी बन गई। इसने वैश्विक ताकतों और प्राधिकरणों को त्रस्त और परेशान करना आरंभ कर दिया।

३. जब दूसरी पीढ़ी की कलीसिया ने रोमी जगत पर आक्रमण करना आरम्भ किया तो रोमी संसार ने भी जबाबी आक्रमण करना आरम्भ कर दिया। यह कलीसिया के लिए एक बड़े सताव का आरम्भ था।

घ. पहली पीढ़ी के प्रेरितों और ''स्तम्भों'' की मृत्यु।

१. पहली पीढ़ी की कलीसिया के पास स्वाभाविक स्तर का अधिकार था। इसके अगुवों ने मसीह के साथ बातें कीं और साथ चले थे। वे मसीह की मृत्यु, पुनरुत्थान, और स्वर्गारोहण के आँखों देखे गवाह थे।

२. जैसे जैसे इनमें से अधिकांश लोग मरते गए, वैसे वैसे सत्य को बिगाड़ना आसान से आसान होता गया। विधर्म अधिकाधिक गम्भीर समस्या बनता गया। झूठे धर्मसिद्धान्तों का खतरा अधिक से अधिक वास्तविक बनता गया।

टिप्पणियाँ —

ड. ७० ई.प में यरूशलेम का विनाश।

१. पहली पीढ़ी की कलीसिया ने यहूदीवाद से सम्बन्धित होने के विशेषाधिकार का आनन्द उठाया। इन आरम्भिक वर्षों में अधिकारिक रोमी अवस्था ने धार्मिक स्वतंत्रता का स्तर उपलब्ध कराया।

२. जैसे जैसे दूसरी पीढ़ी की कलीसिया ने अपनी स्वंय की पहचान विकसित करना आरंभ किया, इसका सामना रोमी सताव से हुआ। यह सताव और अधिक तेज होता गया जब यहूदियों की ओर रोमी समर्थन में बिगाड़ आने लगा।

३. अंत में, यरूशलेम तथा मन्दिर को नाश कर दिया गया।

क. यद्यपि इसने सुसमाचार के प्रसार को बढ़ाया (मसीहियों के तितर.बितर होने से), इसने झूठे धर्मसिद्धान्तों को बढ़ाने में भी योगदान दिया, विशेष रूप से ऐस्केटॉलॉजी (अन्त के दिनों) के क्षेत्र में।

ख. बहुत से मसीही मसीह की तुरन्त वापसी का इन्तजार कर रहे थे। उन्होंने मसीह के आगमन को मन्दिर के विनाश से जोड़ दिया। जब इस घटना के बाद भी वह नहीं लौटा तो इसने भ्रम, सन्देह, और भूल को बढ़ावा दिया, जिसका परिणाम झूठे धर्मसिद्धान्तों के रूप में हुआ।

V. यहूदी विश्वासियों के बीच उत्तरकालीन मसीहियत।

क. याकूब की पुस्तक।

१. याकूब की पुस्तक की प्रकृति।

क. याकूब की पुस्तक नए नियम की पत्रियों में से सबसे अधिक सामान्य पुस्तक है। यह सामान्य इस भाव से है कि यह किसको लिखी गई है। बहरहाल, इब्रानियों की तरह, यह यहूदी मसीहियों को सम्बोधित करती हुई लगती है (देखें याकूब १:१)।

ख. याकूब की पुस्तक नए नियम की सबसे अधिक व्यवहारिक पत्रियों में से एक है। यह उन कार्यों पर ध्यान केन्द्रित करती है जो विश्वास के द्वारा किए जाते हैं। यह शुद्ध धर्मसिद्धान्त के व्यवहारिक परिणामों पर ज़ोर देती है (देखें याकूब १:२७)।

टिप्पणियाँ —

२. याकूब की पुस्तक की सामान्य रूपरेखा।

क. यह पत्र विचारों का ऐसा संकलन है जो स्पष्ट रूपरेखा प्रदान नहीं करते। तो भी, प्रसंग स्पष्ट है। पत्र सच्ची मसीहियत और झूठी मसीहियत के बीच अन्तर पर जो देता है।

ख. इस प्रकार हम इस पुस्तक को इन दो विषयों के अनुसार विभाजित करेंगे।

१) सच्चा धर्म

२) झूठा धर्म

३. याकूब का प्रमुख प्रसंग एवं मुख्य पद।

क. प्रमुख प्रसंग- एक व्यवहारिक विश्वास अपने आपको कार्यों के द्वारा साबित और प्रदर्शित करता है। झूठे धर्म की विशेषता यह होती है कि यह ऐसे विश्वास का दावा करता है जिसमें उचित कार्य सम्मलित नहीं होते।

ख. प्रमुख पद- याकूब १:२७ और याकूब २:२६, ''बिना कार्यों के विश्वास मुर्दा है।''

चर्चा का बिंदु

विचार करें कि याकूब १:२७ और २:२६ को कैसे याकूब की पुस्तक को सारांशित करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

ख. इब्रानियों की पुस्तक।

१. इब्रानियों की पुस्तक की प्रकृति।

क. याकूब की तरह इब्रानियों भी यहूदी विश्वासियों को लिखा गया पत्र प्रतीत होता है (देखें इब्रा. १:१)।

ख. पुस्तक का मुख्य बल पुरानी वाचा के सम्बन्ध में नई वाचा की श्रेष्ठता पर है। शब्द "उत्तम" को कम से कम ११ बार इस संदर्भ में प्रयोग किया गया है।

ग. "उत्तम" वाचा और अधिक चाहनेयोग्य होनी चाहिए। यह पुस्तक इसे स्पष्ट करती है जैसे कि यह यहूदी विश्वासियों को प्रोत्साहित करती है कि वे मसीह में आगे बढ़ें न कि यहूदीवाद में पीछे लौटें।

टिप्पणियाँ –

२. इब्रानियों की सामान्य रूपरेखा।

क. मसीह श्रेष्ठ हैं और उत्तम वाचा के प्रधान हैं (इब्रा. १:१०-१८)।

१) परिचय (इब्रा. १:१-४)।

२) विभिन रूप जिनमें मसीह ''अधिक श्रेष्ठ'' हैं (इब्रा. १:५-७:२८)।

३) विभिन्न रूप जिनमें नई वाचा पुरानी वाचा से ''उत्तम'' हैं (इब्रा ८:१-१०:१८)।

ख. व्यवहारिक विश्वासी जीवन (इब्रा. १०:१९-१२:४)।

१) उदाहरण और विवरण (इब्रा. १०:१९-१२:४)।

२) मसीही अनुशासन (इब्रा. १२:५-११)।

३) मसीही चाल-चलन और जीवन (इब्रा. १२:१२-१३:१७)।

ग. निष्कर्ष (इब्रा. १३:१८-२५)।

३. इब्रानियों के प्रमुख प्रसंग और प्रमुख पद।

क. इब्रानियों के प्रमुख प्रसंग।

१) दुःख उठाना (इब्रा. २:९-१८)।

२) विश्राम (इब्रा. ४:१-११)।

३) याजकपद (इब्रा. ३:१-११; ५:१-१०; ७:१-८:६)।

४) मसीह और नई वाचा की श्रेष्ठता (ऊपर देखें)।

५) विश्वास (अध्याय ११)।

ख. प्रमुख पद - इब्रा. १; १, २; ३:१; और ८:६; ''वह उत्तम वाचा का मध्यस्थ है.....''

चर्चा का बिंदु

विचार करें कि इब्रा. १:१,२, ३:१, और ८:६ को कैसे इबानियों की पुस्तक को सारांशित करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

टिप्पणियाँ —

VI. सताव और ज्ञानवाद का उत्थान।

क. उत्तरकालीन नए नियम की कलीसिया के बाद के वर्षों में सताव तथा ज्ञानवाद बड़ा खतरा था।

१. सताव।

क. अधिकारिक रोमी सताव।

१) नीरो के अन्तर्गत (६४-६८) में, रोम ने मसीहियों के विरुद्ध सताव की अधिकारिक नीति बनाई।

क) नीरो ने मसीहियों को उस आग के लिए ज़िम्मेदार ठहराया जिसने ६४ ई.प. में रोम को जला दिया था।

ख) मसीहियों को यातनाएं दी गईं, उन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया, और उन्हें नीरो के बगीचों में रात के समय ''मानव मशालों'' के रूप में प्रयोग किया गया।

२) डोमिशियन के अन्तर्गत (९० में)।

ख. विस्तृत यहूदी सताव।

१) यहूदी सताव बढ़ता गया जैसे जैसे मसीही विश्वास का विस्तार तथा सफलता बढ़ती गई।

२) यहूदीवाद तथा मसीहियत एक दूसरे से अधिक से अधिक दूर होते गए।

३) यहूदियों ने मसीहियों का तिरस्कार किया जिन्होंने रोमियों के विरुद्ध युद्ध में भाग नहीं लिया (६६-७०)।

टिप्पणियाँ –

ग. सामान्य सताव।

१) दूसरी पीढ़ी की कलीसिया के समय मसीहियों से हर व्यक्ति घृणा करता था। सताव और कष्ट मसीही जीवन का सामान्य हिस्सा था।

२) इस प्रकार नये नियम की आखिरी पुस्तकों में मसीह के लिए दु:ख उठाना बार बार आनेवाला विषय है। इन पुस्तकों के कई भागों में दु:ख उठाने के सम्बन्ध में स्पष्टीकरण, समर्थन, तथा प्रोत्साहन दिया गया है।

२. ज्ञानवाद।

क. ज्ञानवाद का विवरण।

१) ज्ञानवाद ''ज्ञान'' पर बल देता है।

२) यह कहता है कि एक व्यक्ति अध्यात्मिक प्रकाशन के एक रूप के द्वारा ऐसा ज्ञान प्राप्त कर सकता है जिसका परिणाम आत्मिक स्वतंत्रता और परमेश्वर के साथ एकीकरण (मनुष्य के दैवीय स्वभाव के ज्ञान के द्वारा उद्धार) होगा ।

क) साधारणत:, ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया एक गुप्त दीक्षा के रूप में आरंभ होती है।

ख) ज्ञानवाद उन बातों पर केन्द्रित होता है जिन्हें रहस्यमय प्रकाशन के द्वारा जाना जाता है। यह विश्वास को ''ज्ञान'' से हीन समझता है।

ग) ज्ञानवाद ने अभिजात वर्ग के ऐसे गुप्त समूहों को पैदा किया जो अपने आपको मसीही कहते थे और उन्होंने कलीसिया में बहुत से झूठे धर्मसिद्धान्तों को आरम्भ किया।

टिप्पणियाँ —

३) ज्ञानवाद इस बात पर ज़ोर देता है कि जो कुछ भी शारीरिक है वह जन्मजात रूप से दुष्ट है।

क) यह विश्वास करता है कि संसार की रचना एक गलती थी और पुराने नियम के परमेश्वर उनसे अलग थे जिनका हवाला यीशु ने अपने पिता के रूप में दिया।

ख) इस प्रकार यद्यपि ज्ञानवादी यीशु मसीह को एक प्रकार का उद्धारकर्ता कहते हैं (यानि उनकी शिक्षाओं से उद्धार है), पर वे देहधारण पर विश्वास नहीं करते क्योंकि परमेश्वर किसी शारीरिक वस्तु से जुड़े नहीं हो सकते।

ग) एक ज्ञानवादी के लिए प्रायश्चित ज्ञान के द्वारा आया। यह क्रूस के द्वारा नहीं आया।

ख. ज्ञानवादी समस्या।

१) समस्या यह थी कि कुछ ज्ञानवादी विचार मसीही सिद्धान्तों के साथ मिलाए जा रहे थे। बहुत से ज्ञानवादी अपने आप को मसीही कहते थे।

२) हम कई उत्तरकालीन नया नियम पुस्तकों में ज्ञानवाद के स्पष्ट हवाले देखते हैं (देखें १ पत. ३:१८; १ यूह. १:१; ४:२; २ यूह. ७)। ये पुस्तकें ज्ञानवाद को उजागर करने और इसके धोखे के बारे में मसीहियों को सावधान करने का प्रयास करती हैं।

टिप्पणियाँ —

ख. १ एवं २ पतरस की पुस्तक।

१. इन पत्रियों में पतरस के द्वारा सात बहुमूल्य वस्तुओं का हवाला दिया गया है।

क. विश्वास की बहुमूल्य परख (१ पत. १:७)।

ख. मसीह का बहुमूल्य लहू (१ पत. १:१९)।

ग. बहूमूल्य जीवित पत्थर (१ पत. २:४)।

घ. बहुमूल्य कोने का पत्थरः मसीह (१ पत. २:६)।

ङ. बहुमूल्य नम्र और शांत आत्मा (१ पत. ३:४)।

च. बहुमूल्य विश्वास (२ पत. १:१)।

छ. बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं (२ पत. १:४)।

२. १ पतरस।

क. १ पतरस का मुख्य प्रसंग।

१) दुःख उठाने के बीच विजय।

२) दुःख सहना शब्द को कम से कम १५ बार दुहराया गया है।

ख. १ पतरस का मुख्य पद- १ पत. ४:१, ''क्योंकि मसीह ने हमारे लिए दुःख उठाया....''

चर्चा का बिंदु

विचार करें कि १ पत. ४:१ को कैसे १ पतरस की पुस्तक को सारांशित करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

३. २ पतरस।

क. २ परतस का मुख्य प्रसंग- झूठे शिक्षकों और ज्ञानवाद के प्रभावों के विरुद्ध एक चेतावनी।

ख. २ पतरस का प्रमुख पद- २ पत. २:१, ''तुम में झूठे भविष्यद्वक्ता होंगे....''

टिप्पणियाँ –

चर्चा का बिंदु

विचार करें कि २ पत. २:१ को कैसे २ पतरस की पुस्तक को सारांशित करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

ग. १,२,३ यूहन्ना और यहूदा की पुस्तकें।

१. १ यूहन्ना।

क. १ यूहन्ना का मुख्य प्रसंग।

१) क्या सत्य है और क्या झूठ है, इसके बीच अन्तर करने के लिए परीक्षणों को स्थापित करने और वास्तविक ज्ञान को बढ़ावा देने के द्वारा ज्ञानवाद के प्रभाव पर आक्रमण।

२) यूहन्ना पत्रियों को लिखने के चार उद्देश्य प्रस्तुत करते हैं (देखें १ यूह. १:४; २:१; २:२६; ५:१३)।

ख. १ यूहन्ना का मुख्य पद. १ यूह. २:२१, ''कोई झूठ सत्य की ओर से नहीं....''

चर्चा का बिंदु

विचार करें कि १ यूह. २:२१ को कैसे १ यूहन्ना की पुस्तक को सारांशित करने के लिए किया जा सकता है।

२. २ यूहन्ना।

क. २ यूहन्ना का मुख्य प्रसंग – झूठी शिक्षा के विरुद्ध चेतावनी।

ख. २ यूहन्ना का मुख्य पद – २ यूह. ७,८, ''जगत में बहुत से भरमानेवाले निकल आए हैं....''

चर्चा का बिंदु

विचार करें कि २ यूह. ७,८ को कैसे २ यूहन्ना की पुस्तक को सारांशित करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

टिप्पणियाँ –

३. ३ यूहन्ना।

क. ३ यूहन्ना का मुख्य प्रसंग- मसीही आथित्य।

ख. ३ यूहन्ना का मुख्य पद- ३ यूह. ८, ''ऐसों (अजनबियों) का स्वागत करना चाहिए...''

चर्चा का बिंदु

विचार करें कि ३ यूह. ८ को कैसे ३ यूहन्ना की पुस्तक को सारांशित करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

४. यहूदा।

क. यहूदा का मुख्य प्रसंग - झूठे शिक्षकों और ज्ञानवाद के विरुद्ध एक और चेतावनी।

ख. यहूदा का प्रमुख पद- यहूदा ३,४, ''कुछ (अधर्मी) मनुष्य चुपके से हम में आ मिले हैं...''

चर्चा का बिंदु

विचार करें कि यहूदा ३,४, को कैसे यहूदा की पुस्तक को सारांशित करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

घ. प्रकाशितवाक्य की पुस्तक।

१. प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का मुख्य प्रसंग - आत्मिक युद्धों की वास्तविकता और युग के अन्त का आना।

२. प्रकाशितवाक्य का चयनित अध्ययन।

क. इस पुस्तक में बहुत कुछ है जिसका अध्ययन किया जा सकता है। यह वह स्थान नहीं है जहाँ प्रकाशितवाक्य के विस्तृत अध्ययन में प्रवेश किया जाए।

ख. इसके बजाए नए नियम की श्रृंखला के निष्कर्ष के रूप में सात कलीसियाओं के महत्व पर शिक्षा प्रस्तुत करेंगे जिनका वर्णन पुस्तक के आरम्भ में किया गया है।

नया नियम III

टिप्पणियाँ —

चर्चा का बिंदु

निम्नलिखित रेखाचित्र को उस महान प्रकाशन के पहलू पर विचार-विमर्श करने के लिए प्रयोग करें जो यूहन्ना को दिया गया (टिप्पणीः श्रेणी जिसे ''इतिहास'' कहा जाता है, उन बहुत से तरीकों में से एक को प्रतिबिम्बित करती है जिनमें इस परिच्छेद की व्याख्या की जा सकती है)।

पद	कलीसिया का नाम तथा विवरण	सकारात्मक बिन्दु	नकारात्मक बिन्दु	विजय पाने वालों के लिए प्रतिज्ञाएं	इतिहास
२:१-७	इफिसुसः परम्परागत कलीसिया	अच्छे कार्य दृढ़ता बुराईं से घृणा	उन्होंने अपना पहला प्रेम छोड़ दिया	स्वर्ग में अनन्त जीवन	गत प्रेरितीय युग
२:८-११	स्मुरनाः कंगाल परन्तु धनी कलीसिया	दृढ़ता	कोई नहीं	उन्हें दूसरी मृत्यु से कोई हानि नहीं होगी	पहली सदियों का सताव
२:१२-१७	पिरगमुनः बुरे प्रभावों से प्रभावित कलीसिया	प्रतिबद्धता समर्पण, दृढ़ता	झूठी शिक्षा को सहना अनैतिकता	आत्मिक भोजन का एक नया नाम	कॉन्स्टैन्टाइन युग
२:१८-२९	थुआतीराः कलीसिया जो इजेबेल की आत्मा को रहने देती है	अच्छे कार्य प्रेम सेवा दृढ़ता	बुराई के प्रभाव को रहने देना जो अनैतिकता की ओर अग्रसर करता है	अधिकार; भोर का तारा	पोप धर्मत्याग का युग
३:१-६	सरदीसः कलीसिया जो सिर्फ नाम की है परन्तु मुर्दा है	कुछ सदस्य शुद्ध बने रहे हैं	रीतिवाद पाखण्ड	धार्मिकता के वस्त्र स्वर्ग में पहचान	मध्यकालीन युग
३:१४-२२	फिलादेल्फियाः वफादार कलीसिया	निष्ठा थोड़ी सामर्थ दृढ़ता	कोई नहीं	स्वर्ग में ऊँचा पद	सुधार का समय
३:१४-२२	लौदीकियाः धनवान परन्तु कंगाल कलीसिया	कोई नहीं	गुनगुनापन घमंड	यीशु के साथ सिंहासन पर बैठना	अन्तिम दिन

नया नियम III

टिप्पणियाँ —

पाठ्यक्रम निष्कर्षः

यहाँ नया नियम III की समाप्ति होती है, जिसमें नए नियम की कलीसिया के सम्बन्ध में कई प्रसंगों और विषयों का सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण में कारावास पत्रियां (इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, और फिलेमोन), पुरोहितीय पत्र (१ एवं २ तीमुथियुस, तीतुस), दूसरी पीढ़ी की कलीसिया, यहूदी विश्वासियों के मध्य उत्तरकालीन मसीहत (याकूब और इब्रानियों), और सताव तथा ज्ञानवाद का उत्थान (१ एवं २ पतरस, १,२,३, यूहन्ना, यहूदा और प्रकाशितवाक्य) सम्मलित हैं।

यह नये नियम पाठ्यक्रमों की श्रंखला को भी पूरा करता है। आशा है कि यह सर्वेक्षण नए नियम की विषय-वस्तु की सामान्य जानकारी तथा समझ उपलब्ध कराएगा।

नया नियम III

टिप्पणियाँ –

नया नियम III अंतिम टिप्पणियां

[१]वाचमैन नी, सिट, वॉक, स्टैन्ड (व्हीटन, III: टिन्डेल हाउस पब्लिशर्स, इंक, १९७९)।

नया नियम III

टिप्पणियाँ –